के माध्यम से अवगत कराएगा। इससे आपकी रोज़गार पाने की क्षमता में सुधार होगा। पाठ्यक्रम के चार खंड हैं।

पाठ्यक्रम

खंड 1 : गणितीय एवं सांख्यिकीय प्रविधियां : एक सिंहावलोकन

इकाई 1 : गणितीय संकल्पनाएं
इकाई 2: सांख्यिकीय संकल्पनाएं
इकाई 3: सांख्यिकीय सॉफ्टवेयर : एक परिचय

खंड 2 : आंकड़े : एकत्र करना और उनकी प्रस्तुति

इकाई 4: आंकड़े एकत्र करना : विधियां और स्रोत
इकाई 5: आंकड़े एकत्र करने के उपस्कर
इकाई 6: आंकड़ों की प्रस्तुति

खंड 3: परिणात्मक आंकड़ों का विश्लेषण

इकाई 7 : एकल चर आंकड़ों का विश्लेषण
इकाई 8: द्वि-चर आंकड़ों का विश्लेषण
इकाई 9: बहुचर आंकड़ों का विश्लेषण

खंड 4: संयुक्त सूचकांक एवं गुणात्मक आंकड़ों का विश्लेषण

इकाई 10: संयुक्त सूचकांक
इकाई 11: गुणात्मक आंकड़ों का विश्लेषण

4. अविशिष्ट ऐच्छिक विषय

बीएसओजी 171 : भारतीय समाज : बिंब एवं वास्तविकताएँ 6 क्रेडिट

यह पाठ्यक्रम भारतीय समाज का एक बहु विधायी परिचय देता है।

पाठ्यक्रम

खंड 1 : भारत : संकल्पनाएं

इकाई 1 : सभ्यता एवं संस्कृति
इकाई 2: भारत एक उपनिवेश के रूप में
इकाई 3: राष्ट्र, राज्य और समाज

खंड 2 : संस्थाएँ एवं प्रक्रियाएं

इकाई 4: ग्राम्य भारत
इकाई 5: नागर भारत
इकाई 6: भाषा, धर्म एवं प्रत्याख्यान
इकाई 7 : जाति एवं वर्ग
इकाई 8 : जनजाति एवं प्रजातीयता
इकाई 9 : परिवार एवं विवाह
इकाई 10 : बंधुता

खंड 3 : समालोचनाएं

इकाई 11: वर्ग, सत्ता और विषमता
इकाई 12: प्रतिरोध

बीपीएजी 172 : प्रशासन : मुद्दे एवं चुनौतियाँ 6 क्रेडिट

प्रशासन : मुद्दे एवं चुनौतियां विषयक यह प्रशासन पाठ्यक्रम विषयक संकल्पनाओं, इनके विभिन्न उद्दीप्यमान आयामों से जुड़ा है और विभिन्न समकालिक विमर्शों से आपको परिचित कराएगा। यहां अध्येता का परिचय वैश्वीकरण, सरकार, राज्य, बाज़ार, सम्य समाज और प्रशासन जैसी संकल्पनाओं से कराया जाएगा।

यहाँ भारत में प्रशासकीय रूपरेखा एवं उसके पणधारियों की भूमिका के संकल्पनात्मक आयामों की समीक्षा की जा रही है। विकास से लोकतंत्र को सुदृढ़ करने के विभिन्न पक्षों का विश्लेषण किया जा रहा है। आज के समय में प्रशासन का वितान, नौकरशाही की बदलती भूमिका, सूचना एवं संप्रेषण प्रौद्योगिकी, मीडिया के प्रभाव, पारदर्शिता और उत्तरदेयता, धारणीय मानव विकास, निगम प्रशासन आदि पर नवीन संदर्शों के साथ विकसित एवं विस्तृत हो रहा है। ये सभी विषय इस पाठ्यक्रम का अंग हैं।

स्थानीय प्रशासन के महत्त्वपूर्ण आयामों और भागीदारी पूर्ण शासन पर भी यहां चर्चा की गई है। भारत में श्रेष्ठ प्रशासन विषयक पहलों के माध्यम से इस पाठ्यक्रम में प्रशासन के सत्व का अनुसंधान करने का प्रयास किया गया है।

पाठ्यक्रम

खंड 1 : सरकार एवं प्रशासन : संकल्पनाएं

इकाई 1 : वैश्वीकरण : सरकार, बाज़ार और सभ्य समाज की भूमिकाएं
इकाई 2: प्रशासन : संकल्पनात्मक आयाम
इकाई 3: भारत में प्रशासन की रूपरेखा
इकाई 4 : प्रशासन के पणधारी

खंड 2 : प्रशासन एवं विकास

इकाई 5: विकास के बदलते हुए आयाम
इकाई 6: प्रशासन द्वारा लोकतंत्र का सुदृढ़ीकरण

खंड 3 : प्रशासन : उदीप्यमान संदर्श

इकाई 7 : प्रशासन की चुनौतियां एवं नौकरशाही की बदलती हुई भूमिका
इकाई 8 : सूचना एवं संप्रेषण प्रौद्योगिकी तथा प्रशासन
इकाई 9 : मीडिया की भूमिका
इकाई 10 : निगम प्रशासन
इकाई 11 : धारणीय मानव विकास
इकाई 12 : पारदर्शिता एवं उत्तरदेयता

खंड 4 : स्थानीय प्रशासन

इकाई 13: विकेंद्रीकरण और स्थानीय प्रशासन
इकाई 14 समाहनकारी एवं भागीदारीपूर्ण प्रशासन

खंड 5 : भारत में सुशासन की पहलें

इकाई 15 लोक सेवा गारंटी अधिनियम, नागरिक अधिपत्र, सूचना का अधिकार, निगम सामाजिक दायित्व

बीपीएजी 173 : ई-प्रशासन 6 क्रेडिट

यह पाठ्यक्रम लोक प्रशासन संगठनों में ई-प्रशासन की संकल्पनागत रूपरेखा से संबंधित है। संकल्पना, प्रतिमान, भूमिका एवं महत्त्व, ICT-घटकों एवं अनुप्रयोगों तथा सूचना प्रणालियों पर प्रकाश डालते हुए यह पाठ्यक्रम ग्रामीण विकास, नगर विकास, ई-अध्ययन, ई-वाणिज्य तथा ई-स्वास्थ्य प्रणालियों के सभी महत्त्वपूर्ण संभागों एवं क्षेत्रों को ही अपने कलेवर में समेट लेता है। साथ ही यहां ई-प्रशासन के प्रभावी क्रियान्वयन के कुछ उपायों पर भी विचार किया गया है।

पाठ्यक्रम

खंड 1 : ई-प्रशासन : एक संकल्पनात्मक रूपरेखा

इकाई 1 : संकल्पना, प्रतिमान, भूमिकाएं एवं महत्त्व
इकाई 2: ICT-घटक एवं अनुप्रयोग
इकाई 3: सूचना प्रणालियाँ

खंड 2 : प्रशासन में ICT की भूमिका

इकाई 4 : प्रशासनिक संस्कृति का प्रत्यावर्तन
इकाई 5: ई-प्रशासन : सरकार के विभागों/संस्थानों/एजेंसियों में

खंड 3 : स्थानीय प्रशासन में ICT की भूमिका

इकाई 6 : ई-ग्रामीण विकास
इकाई 7 : ई-नागर विकास
इकाई 8 : ई-अध्ययन
इकाई 9 : ई-वाणिज्य
इकाई 10 : ई-स्वास्थ्य

खंड 4 : ई-प्रशासन के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु उपाय

इकाई 11: प्रभावी ई-प्रशासन : चुनौतियाँ एवं उपाय

बीपीएजी 174 : धारणीय विकास 6 क्रेडिट

इस पाठ्यक्रम में विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन बनाए रखने की चुनौतियों पर विचार किया गया है। इसका मुख्य लक्ष्य धारणीय विकास के अर्थ, स्वरूप और वितान को रेखांकित करते हुए उसके मुख्य घटकों की व्याख्या करना है। यहां इस बात पर आग्रह किया गया है कि यदि आपकी भावी पीढ़ियों के लिए क्या छोड़ा जा रहा है, इस प्रश्न पर ध्यान नहीं दिया गया तो विकास करना संभव नहीं होगा। यहां धारणीय विकास के लक्ष्यों की समीक्षा करते हुए वैश्विक सांझा संपदाओं की भूमिका और जलवायु, परिवर्तनों पर भी चर्चा की गई है। पाठ्यक्रम का एक विशिष्ट अभिलक्षण धारणीय विकास एवं विकास के लक्ष्यों के बीच संबंधों तथा वैकल्पिक संसाधन सृजन तथा क्षमता संवर्धन की विभिन्न विधियों पर केंद्रित है।

पाठ्यक्रम

खंड 1 : धारणीय, विकास की संकल्पना

इकाई 1 : धारणीय विकास : अर्थ, स्वरूप और वितान
इकाई 2: धारणीय विकास : मुख्य घटक
इकाई 3: धारणीय विकास के प्रति दृष्टिकोण

इकाई 4 : धारणीय विकास के लक्ष्य

खंड 2 : विकास, धारणीयता एवं जलवायु परिवर्तन

इकाई 5: वैश्विक सांझा संपदाओं की संकल्पना और जलवायु परिवर्तन
इकाई 6: धारणीय विकास पर अंतर्राष्ट्रीय संधियाँ
इकाई 7 : विकास, धारणीयता और जलवायु परिवर्तन के अंतर्संबंध : दायित्वों में भिन्नता हेतु तर्क

खंड 3 : स्वास्थ्य, शिक्षा एवं खाद्य सुरक्षा

इकाई 8 : धारणीय विकास और खाद्य-सुरक्षा के अंतर्संबंध
इकाई 9 : स्वास्थ्य, स्वच्छता और खाद्य सुरक्षा के संदर्भ में हरित एवं अभिसृजितपूर्ण प्रौद्योगिकीयों की भूमिका
इकाई 10 : धारणीय विकास में शिक्षा की भूमिका

खंड 4 : धारणीय विकास : आगे का रास्ता

इकाई 11: धारणीय विकास में नीति नवप्रवर्तन की भूमिका
इकाई 12: समता एवं न्याय की पारिस्थितिकीय सीमाओं को समझना
इकाई 13 : संसाधन सृजन और क्षमता संवर्धन की वैकल्पिक विधियाँ

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY